NEW INTERNATIONAL ECONOMIC ORDER
(N I E O.)

अं. विश्व अर्थव्यवस्था और New International Eco. order

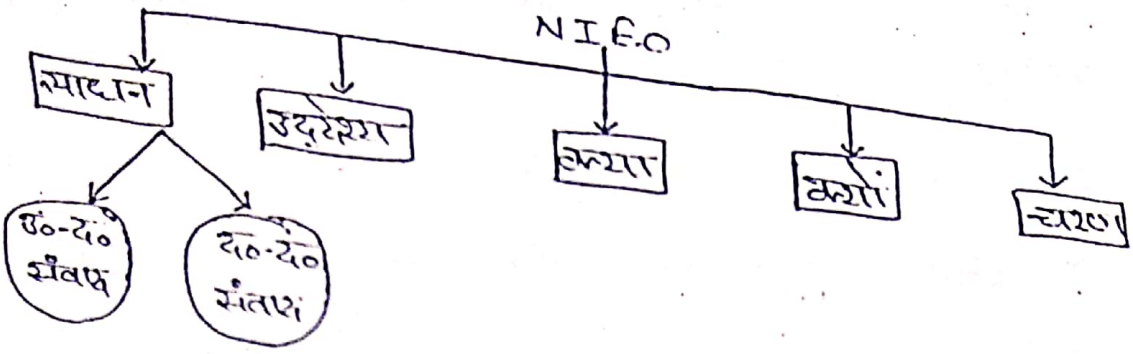

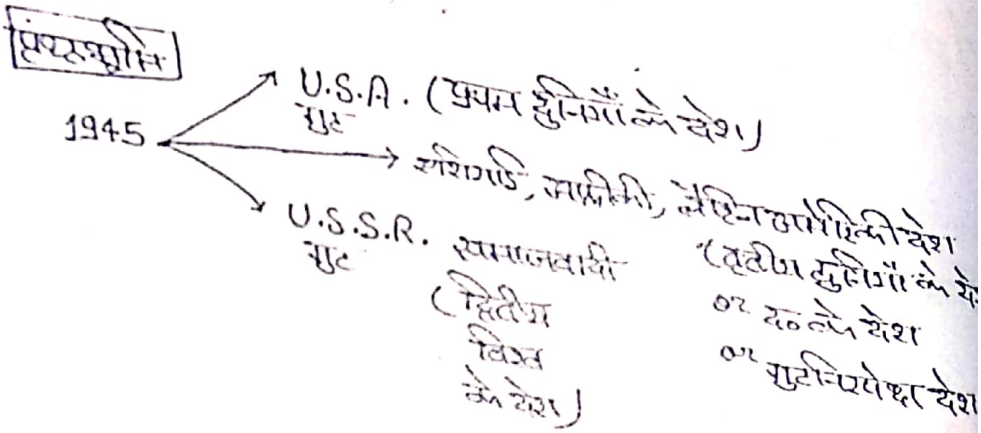

⇒ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की व्यवस्था को ब्रिटेन वुड्स आर्थिक व्यवस्था कहा गया।

⇒ 1970 के दशक में तेल संकट, E.O. का निर्माण हो चुका था।

⇒ E.O. द्वारा 1974 में अपने बाजार विकासशील देशों के लिए बन्द कर दि

⇒ 1974 में Multy Fiber Agriment

प्रथम चरण - आशा का 1947-70

द्वितीय चरण - संघर्ष का 1970 के बाद

⇒ NIEO- विकासशील देशों की माँग, ब्रिटेनवुड्स का विरोध।

Scanned with CamScanner

नव अं. आर्थिक व्यवस्था: -

विकासशील देशों या तीसरी दुनियाँ के महत्वपूर्ण संगठन G-77 ने अपने 32वें वार्षिक सम्मेलन (Sep 2008) में (न्यूयॉर्क में) द० द० सहयोग पर बल प्रदान करते हुए कहा कि वर्तमान विश्व व्यवस्था में विकासशील देशों के समक्ष गरीबी का बने रहना सबसे चुनौतीपूर्ण है और यह विकसित देशों हेतु भी चिंता का विषय है, और यदि वर्तमान विश्व आर्थिक संकट समाधान करना है तो विकासशील देशों का विकास करना सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। वर्तमान वित्तीय संकट की उत्पत्ति विकसित देशों से हुई। G-77 के देशों ने पुन: नं. आर्थिक एवं वित्तीय संरचना के समग्र पुनरवलोकन की माँग उठाई, इसके अन्तर्गत निम्न माँग सम्मलित है -

(A) I.M.F. जैसी संस्थाओं मे विकासशील देशों की भागीदारिता एवं निर्णय निर्माण में वृद्धि करना। निर्णय के नए मानकों की स्थापना

(B) विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों का ~~निवेश~~ ओं के विकास हेतु निवेश ?.. व्यापार किया जाए।

(C) विकासशील देशों को उच्चतर तकनीकि का स्थानान्तरण किया जाए।

(D) बौद्धिक सम्पदा अधिकार का संशोधन करते हुए, पर्यावरणीय और जनस्वास्थ्य की तकनीकिं को मानव मात्र की भलाई हेतु प्रयोग किया जाए।

(E) जिससे सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव हो सके।

(F) पर्यावरण। वार्ताओं में विकासशील देशों के हितों का संरक्षण। किया जाए।

Scanned with CamScanner

(Q) भारतीय विदेश नीति के अनुसार G-77 और विकासशील देशों के साथ भारतीय सहयोग सदैव रहेगा।।

I.B.S.A. फोरम –
(India, Brazil, South Africa)

नई दिल्ली में भारत और I.B.S.A. बैठक में निम्न प्रस्ताव पारित किए गए, जो नई अं. अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित है –

(1) दोहा विकास वार्ता की प्रगति हेतु कृषि और गैर कृषि बाजार पहुँच के मुद्दे पर सामान्य सहमति निर्माण पर बल।

(2) कृषि क्षेत्र के मुद्दे पर विकासशील देशों की संवेदनशील स्थिति का ध्यान रखना।

(3) द०-द० सहयोग में वृद्धि के द्वारा बहुपक्षीय व्यापार को सरल बनाना।

(4) सहस्राब्दि लक्ष्यों हेतु विकसित देशों द्वारा तकनीकी एवं वित्त का हस्तान्तरण करना।

NIEO. का Slogan – "Trade, Not Aid"

उ०-द० संवाद – विकसित – विकासशील संवाद

उ०-उ० संवाद – विकसित – विकसित देशों के बीच संवाद

Scanned with CamScanner

उत्तर और दक्षिण के मध्य बढ़ती विषमता - (NIEO का औचित्य)

द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर युग में विकासशील देशों ने विकसित देशों की तकनीकि और आर्थिक सहायता द्वारा औद्योगीकरण करने का प्रयास किया, और पहले दशक में विकासशील देशों का दृष्टिकोण अत्यधिक आशावादी था, ये विकसित देशों की तकनीकि सहायता पर निर्भर थे परन्तु व्यावहारिक रूप में आशानुरूप सहायता प्राप्त नहीं हुई और प्रमुख ब्रिटेनवुड व्यवस्था के अन्तर्गत विकासशील देशों के हितों की उपेक्षा हुई। गैट की नीव पर समान राष्ट्रीय व्यवहार का सिद्धान्त अपनाया गया। जबकि विकासशील देशों ने समान राष्ट्रीय व्यवहार के बजाय वरीयता व्यापार का समर्थन किया। विश्व व्यापार में व्यापार की शर्तें सदैव विकासशील देशों के प्रतिकूल रही, जिससे विकसित और विकासशील देशों के मध्य खाई में वृद्धि हुई। विकसित देश धनी होने लगे जबकि विकासशील देशों की स्थिति खस्ताहाल होने लगी। 1964 में "UNCTAD" ने विश्व व्यापार में विषमता की ओर स्पष्ट ध्यान दिलाया गया।

सत्तर के दशक में विकासशील देशों को अत्यधिक निराशा हुई और अन्तर निर्भरता के बजाय विकासशील देश विकसित देशों पर निर्भर होने लगे और विकसित देश व्यापार पर भी प्रभुत्व बनाने लगे जिससे आलोचकों ने इसे नव उपनिवेशवाद की संज्ञा दी। अतः विकासशील देशों ने इस शोषणकारी विषमतामूलक स्थिति के विरुद्ध आवाज उठाई।

किंतु ध्यान देने योग्य है कि 1970 के दशक में गैट की वार्ताओं में मुक्त व्यापार पर अत्यधिक बल दिया गया जबकि विकसित देशों ने 1974 के मल्टीफाइबर एग्रीमेंट से विकासशील देशों के टेक्सटाइल निर्यात को अपने बाजारों में प्रतिबंधित कर दिया।

ब्रिटेनवुड्स व्यवस्था की विकासशील देशों ने खुली आलोचना की क्योंकि इस व्यवस्था द्वारा विकसित देश अपने व्यापारिक हितों को पूरा करने हेतु प्रयत्नशील थे।
I.M.F. द्वारा प्रदत्त ~~क~~ ऋणों पर प्रतिकूल शर्तें आरोपित की। I.M.F. ने आर्थिक सहायता करने में भी गलत मानदण्डों को प्राथमिकता दी।

तृतीय चरण या 80 का दशक -

80 के दशक को विकासशील देशों हेतु विकासहीन अवस्था कहा गया, तीसरी दुनियां कर्ज के दब गये। उ० द० संवाद निराशाजनक रहा। सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोपीय राज्यों की सहायता I.M.F. द्वारा प्राथमिक रूप से की गयी, जिससे एशियाई, अफ्रीकी देशों को स्पष्ट रूप से हानि हुई। यद्यपि 90 के दशक में ~~HE~~ N.I.E.O. का मुद्दा W.T.O. के मंच पर स्थानान्तरित हो गया।

N.I.E.O. के मूल उद्देश्य -

① विकासशील देशों में आर्थिक वृद्धि दर बढ़ाना।

② विकसित और उ० के देशों पर निर्भरता कम करना।

③ उ०-द० के मध्य व्यापार बढ़ाना तथा विकसित देशों की नवउपनिवेशवादी नीतियों का विरोध करना।

④ विकासशील देशों के आर्थिक भविष्य का निर्धारण स्वयं विकासशील देशों द्वारा करना।

⑤ आर्थिक अन्तर निर्भरता में वृद्धि करना।

नव अं० आर्थिक व्यवस्था के मूल मुद्दे -

(A) व्यापारिक शर्तों में सुधार

(B) औद्योगिक देशों के बाजारों में विकासशील देशों की वस्तुओं की पहुँच सुनिश्चित करना।

(C) I.M.F. और I.B.R.D. में सुधार।

(D) तीसरी दुनिया को ऋण बाहर बोझ से मुक्त कराना।

(E) विकसित देशों से आर्थिक, तकनीकी हस्तान्तरण, गरीबी उसके आर्थिक संसाधनों पर प्रभुत्व की रक्षा।

(A) व्यापार न कि सहायता -
(Trade Not Aid)

नव अं० आर्थिक व्यवस्था का मूल नारा व्यापार केन्द्रित हो गया, विकासशील देशों ने इस परम्परागत मान्यता को अस्वीकार किया कि सहायता एवं अनुदान ही विकास का प्रमुख साधन है।

अतः 1974 में NIEO द्वारा विकासशील देशों ने विकसित देशों की संरक्षणवादी नीतियों का विरोध किया क्योंकि विकसित देश एक ओर सहायता देने का दिखावा करते थे तो दूसरी ओर व्यापारिक रूप से भेदभावपूर्ण व्यवहार का पालन करते थे इनके उदाहरण निम्न हैं -

(i) 1974 का मल्टीफाइबर समझौता
(ii) कच्चे पदार्थों की कीमतों को निम्नतर स्तर रखना।
(iii) विकासशील देशों की वस्तुओं को विकसित देशों के बाजार में पहुँचने से रोकना।

अतः विकासशील देशों ने बाजार पहुँच का मुद्दा मूल बनाया क्योंकि उनके अनुसार अनुदान द्वारा विकसित देश अपनी शर्तें आरोपित करते हैं तथा इससे विकासशील देशों में ऋण का बोझ भी बढ़ता है।

<u>वर्तमान स्थिति</u> -

समकालीन वैश्वीकरण के युग में भी विकासशील देशों के समक्ष विकसित देशों के बाजारों में पहुँचने की समस्या, सबसे प्रमुख, विकसित देश अनेक तरीकों से अपने बाजारों को प्रतिबन्धित करते हैं -

(A) प्रशुल्कीय माध्यम (D) डम्पिंग विरोधी नीति
(B) गैर प्रशुल्की माध्यम
(C) पर्यावरणीय व श्रम मानक

Scanned with CamScanner

(2) व्यापार की शर्तें :-

"विकासशील देश मूलतः कच्चे पदार्थों के निर्यातक हैं जबकि विकसित देशों द्वारा विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात किया जाता है और अं. व्यापार में कच्चे पदार्थों की कीमत में अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखा जाता तथा उनकी कीमत बाजार में सदैव अनिश्चित एवं अस्थिर होती हैं ∴ अं.व्यापार में विकासशील देशों की स्थिती तात्विक रूप में नेतृत्विक हो जाती है। इस समस्या का समाधान लेकिन अर्थशास्त्री विचारक रॉल प्रेबिश ने सुझाया और उनके अनुसार विकासशील देशों को अपनी आर्थिक स्थिती सुदृढ़ करने हेतु स्वायत्त रूप में औद्योगीकरण पर बल देना होगा। उनके अनुसार "विकासशील देशों की आर्थिक स्थिती बेहतर होने का मूल कारण उनका औद्योगिक रूप में पिछड़ा होना है।"

समीर अमीन और आंद्रे गुण्डर फ्रैंक जैसे विचारकों ने नव अं. आर्थिक व्यवस्था की प्राप्ति का अमूलचूल सुझाव दिया, और इनके अनुसार पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली के अन्तर्गत तीसरी दुनिया के देशों का विकास सम्भव नहीं है ∴ पूँजीवादी व्यवस्था के विकल्प निर्माण की आवश्यकता है, इनके अनुसार विकासशील देशों की स्थिति के पिछड़े होने का मूल कारण व्यापार की प्रतिकूल शर्तें हैं। विकासशील देशों की अल्पविकसित स्थिती का मूल कारण विकसित देशों द्वारा किया गया शोषण है।

इन उमूलनवादी मान्यताओं के विचार उस समय असफल प्रतीत होने लगे जब द० पूर्वी एशियाई देशों जिन्हें नव औद्योगिक राष्ट्र भी कहा जाता है इन्होंने पूँजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत ही अपना विकास किया, इन देशों में ताइवान, सिंगापुर, इंडोनेशिया, द० कोरिया जैसे देश सम्मलित थे। बाद में इसमें थाइलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया भी सम्मलित हो गए। वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था में विकासशील राष्ट्र भेदभाव और प्रभुत्व के समाप्त करने की अपेक्षा रखते हैं न कि समूची व्यवस्था के विध्वंस के समर्थक हैं। उदा० हेतु शाम्य आधारित राष्ट्रों ने भी बाजारवादी प्रणाली को स्वीकार कर लिया है, इसके बावजूद इसके पुनर्संरचना की मांग प्रभावी है।

ब्रिटेन वुड्स व्यवस्था में सुधार - ब्रिटेनवुड्स व्यवस्था का आशय I.M.F., I.B.R.D. तथा गैट नामक तीनों संस्थाओं से है। I.M.F का निर्माण राज्यों को संकटकाल में अल्पकालिक ऋण देने हेतु किया गया जबकि I.B.R.D. (विश्व बैंक) का निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ध्वस्त पश्चिमी यूरोपीय देशों के पुनः निर्माण हेतु किया गया। विश्व बैंक द्वारा राज्यों को दीर्घकालिक ऋण प्रदान किए जाते जिनसे वे अपना विकास कर सकें जबकि गैट का मूल उद्देश्य विश्व में बहुपक्षीय व्यापार को बढ़ाना था, इन संस्थाओं की संरचना पर विकसित देशों का प्रभुत्व रहा

जो निम्न रूप से देखा जा सकता है -

(A) विश्व बैंक का प्रेसीडेन्ट अमेरिकी तथा मुद्रा कोष का निदेशक कोई पश्चिमी यूरोपीय व्यक्ति ही हो सकता है।

(B) इन संस्थाओं में राज्यों के वोट उनके आर्थिक योगदान के अनुपात से निर्धारित होते हैं, इस प्रकार 10 औद्योगिक देशों का इन संस्थाओं के मतों पर प्रभुत्व है।

(C) विकासशील देशों की स्थिति इन संस्थाओं में पूर्णतः विकसित देशों पर निर्भर है।

इसलिए 1970 के दशक से ब्रेटनवुड्स संस्थाओं में पुनः संरचना की माँग उठने लगी क्योंकि विकासशील देशों के अनुसार इनके प्रभावों में भी व्याप्त है जिसे निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है -

(1) I.M.F. द्वारा जब ऋण प्रदान किया जाता है और विकासशील देशों हेतु ये शर्तें अत्यधिक शोषणकारी होती हैं।

(2) I.M.F. द्वारा दी गई आर्थिक सहायता राजनीतिक मान्यताओं द्वारा निर्धारित होती है। जैसे - 1997 के दक्षिणी एशियाई आर्थिक संकट हेतु I.M.F. ने भारी सहायता प्रदान की परन्तु वर्ष 2001 में अर्जेन्टीना पर आर्थिक संकट पर I.M.F. ने पर्याप्त सहयोग नहीं किया।

(3) शीतयुद्ध के विश्व में इन संस्थाओं का कार्य वैचारिक संघर्ष से प्रभावित था।

शीतयुद्धोत्तर विश्व में भी विकेन्द्रीकृत संविधान में सुधार की माँग व आयाम है। शीतयुद्धोत्तर विश्व में I.M.F. द्वारा संचालित संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम की आलोचना हुई, विकासशील देशों ने इसे अपनाते हुए जिन शर्तों को स्वीकार किया उससे उनके कल्याणकारी कार्य प्रभावित हुए और संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम की आलोचना इसी संदर्भ में है कि इसमें क्षेत्र एवं परिस्थितियों की भिन्नता का ध्यान नहीं रखा जाता और सभी राष्ट्रों हेतु सुधार के एक ही उपाय बताए जाते हैं। शीतयुद्धोत्तर विश्व में खाड़ी युद्ध के बाद U.S. ने मिस्र के ऋण माफ कर दिए क्योंकि मिस्र ने खाड़ी युद्ध में U.S. की सहायता की और शीतयुद्धोत्तर विश्व में विकासशील देशों की सहायता राशि में और कटौती हुई क्योंकि I.M.F. और I.B.R.D. ने रूस और सोवियत संघ के पूर्व गणराज्यों को आर्थिक सहायता प्रदान की जिससे अफ्रीकी, एशियाई देशों को मिलने वाली सहायता और कम हो गई। वर्तमान विश्व आर्थिक संकट देखते हुए I.M.F. की संरचना में सुधार की माँग पुनः प्रभावी हुई। विचारकों के अनुसार इसमें भारत एवं ब्राजील जैसे विकासशील देशों की भूमिका अधिक बढ़ाई जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

गैट के निर्माण के बाद विकसित देशों ने मुक्त व्यापार से पारस्परिकता सिद्धान्त को महत्व दिया तो विकासशील देशों ने वरीयता व्यापार की माँग उठाई और 70 के दशक में विकासशील देशों की व्यापार वृद्धि के लिए इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया और वरीयता व्यापार की यह माँग आज भी W.T.O. के मंच पर प्रमुख है और W.T.O. वार्ताओं में विकासशील देशों को वरीयता देने के बजाए विकसित देश नई संरक्षणवादी नीतियाँ अपना रहे हैं जिससे स्पष्ट है कि नए अं. आर्थिक व्यवस्था की माँग आज भी प्रासंगिक है भले मंच बदल गए हों।

कर्ज का बोझ – (1974)

विकासशील देशों ने अपने आर्थिक विकास के लिए प्रारम्भिक रूप में विकसित देशों से वित्तीय और तकनीकि सहायता प्राप्त की और 70 के दशक तक वे कर्ज के दुष्चक्र में फंस गए थे। नए अं. आर्थिक व्यवस्था की माँग में इस कर्ज के बोझ को कम करने की माँग मुख्य थी। वर्तमान समय में भी अधिकांश विकासशील देश कर्ज के बोझ से दबे हैं। U.N.O. के आँकड़ों के अनुसार वर्तमान में अफ्रीकी महाद्वीपीय देशों पर उनके G.D.P. का 61% भाग ऋण के रूप में है। जबकि यूरोपीय देशों के G.D.P. का 88% कर्ज के रूप में है।

और शीतयुद्धोत्तर विश्व में ऋणों के बोझ से मैक्सिको देश दिवालिया हो गया। सन्‌ 2001 में अर्जेन्टीना की व्यवस्था ध्वस्त हो गयी। इक्वेडोर, ब्राजील और मैक्सिको जैसे देश भी गहरे ऋण संकट के शिकार हो चुके हैं।

द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर विश्व में विकासशील देशों की यह आशा धूमिल हो गयी कि राजनैतिक स्वतंत्रता का तार्किक परिणाम आर्थिक स्वतन्त्रता होगी और विकासशील देश नव-साम्राज्यवाद के शिकार होने लगे। यद्यपि वर्तमान विश्व में I.M.F. ने अफ्रीका के अत्यधिक निर्धनतम देशों के ऋण माफ कर दिए जो सकारात्मक पहल है। विकासशील देशों ने शीतयुद्धोत्तर विश्व में अपनी विकास की रणनीति में परिवर्तन किए उन्होंने तथा विदेशी निजी निवेश आकर्षित करने की नीति अपनाई है जिससे इनके ऋण के बोझ कम हो सकें।

तकनीकि हस्तान्तरण — विकासशील देशों की आर्थिक दशा में सुधार हेतु वित्तीय सहायता पर्याप्त नहीं है बल्कि इन देशों का विकास नवीन आधुनिक तकनीकि द्वारा हो सकता है। इस तकनीकि पर प्रभुत्व विकसित देशों का है और नव में-आर्थिक व्यवस्था

Scanned with CamScanner

के माध्यम से विकासशील देशों ने तकनीकि हस्तान्तरण का मुद्दा केन्द्रीय बना दिया। लेकिन विकसित देश [illegible] आलोचना करार उससे कुछ तकनीकि हस्तान्तरण भी करते रहा। इसकी समस्या कि विना तकनीकि का हस्तान्तरण भी करते है जो विकासशील देश अनुपयुक्त होती है। वर्तमान विश्व में तकनीकि हस्तान्तरण संघ ज्यादा प्रभावशाली हो रही है, इससे जुड़ी समस्याएँ निम्न है -

(A) बौद्धिक सम्पदा (TRIPS) अधिकारों से लागू होने से तकनीकि हस्तान्तरण व्यवस्था और जटिल हो रही है।

(B) तकनीकि का खरीदने हेतु भारी कीमत चुकाने की दशा में विकासशील सक्षम नहीं है।

(C) वर्तमान पर्यावरणीय संकट देखते हुए तकनीकि हस्तान्तरण मुद्दा ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ - नव अ.रा.आर्थिक व्यवस्था की माँग में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका को अत्यन्त नकारात्मक माना गया। मार्क्सवादी सिद्धान्तकारों ने इन्हे नव साम्राज्यवाद का मोहरा कहा। इसलिए के विश्व में इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका आर्थिक एवं राज० दोनों क्षेत्रों में नकारात्मक मानी गई जिसे निम्न रूपों में देखा जा सकता है -

① बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने विकासशील देशों के कच्चे पदार्थों और प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण कर लिया

जिससे अच्छे पदार्थों का लाभ विकासशील राष्ट्रों को प्राप्त नहीं हुआ। (2) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने राष्ट्रीय सम्प्रभुता का उल्लंघन किया।

(3) इनसे अपना एकाधिकार में वृद्धि तथा प्रतिस्पर्धा में कमी हुई।

(4) ये कम्पनियाँ ~~मेजबान~~ मेजबान देशों से अपनी पूँजी अर्जित करती हैं जबकि इसका लाभ मेहमान देश को प्राप्त होता है।

(5) 1970 के दशक में चीन में International Telephone एवं Telegraph नामक कम्पनी ने अपने हितों को सुरक्षित करने हेतु साम्यवादी सेना सल्वाडोर अलेन्दे को पराजित करने हेतु विपक्षियों का प्रयोग किया।

(6) 1970 के दशक में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नकारात्मक भूमिका के कारण विकासशील देशों ने राष्ट्रीयकरण की नीति अपनाई और पश्चिमी पूँजीवादी देशों ने भी कुछ तेल कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण का निर्णय लिया।

(7) आलोचकों के अनुसार भूमण्डलीकरण युग में भी इन कम्पनियों पर कोई सीधा नियंत्रण नहीं है। इनका आकार इतना बड़ा है कि ये किसी भी राष्ट्र के निर्णय को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

Scanned with CamScanner

४ (8) विकासशील देशों की समस्या ज्यादा है क्योंकि इन अधिकांश कंपनियों के मुख्यालय विकसित देशों में है।

वर्तमान भूमण्डलीकरण युग में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रति विकासशील दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। आज ये देश ज्यादा से ज्यादा इन कंपनियों को आकर्षित करने हेतु प्रयत्नशील हैं। Ex- 2000 में मोटोरोला कंपनी को भारत और चीन देशों ने आकर्षित करने का प्रयत्न किया लेकिन मोटोरोला ने अपना उद्यम चीन में स्थापित किया। अतः उत्तर औद्योगिकतावादी राज्य (विकासशील) भी विकास हेतु निजी निवेश आकर्षित करने हेतु प्रतिस्पर्धी कर रहे हैं।

नव अं. आर्थिक व्यवस्था पूर्ण करने के माध्यम -

नव अं. आर्थिक व्यवस्था को पूर्ण करने हेतु उ० द० संवाद का सहारा लिया गया। इसके अन्तर्गत 1975 में पेरिस सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें 8 विकसित तथा 19 विकासशील देशों ने सहभागिता की, इसमें निम्न बिंदुओं पर विचार हुआ -

(A) विकासशील देशों ने तीसरी दुनियाँ को निर्यातित वस्तुओं के मूल्य को स्थिर रखने हेतु एक विशेष कोष की स्थापना का प्रावधान किया।

Scanned with CamScanner

(B) अधिक विकसित देशों ने विकासशील देशों से तेल कीमतों को निश्चित करने की माँग की, जिसे तेल निर्यातक देशों ने मना कर दिया, फलस्वरूप यह सम्मेलन असफल रही थी।

अब मे. आर्थिक व्यवस्था की मांग U.N.O. के मंच से उठी, विकसित देशों ने इस माँग के प्रति आरम्भ में स्वागतक अनुक्रिया दिखाई क्योंकि विकसित देशों को तेल उत्पादक राष्ट्रों की सफलता का प्रत्यक्ष अनुभव था। परन्तु वे इस माँग को महासभा से बाहर करना चाहते थे क्योंकि महासभा में विकासशील देशों का बहुमत था।

उ०-द० संवाद के मुद्दे को लेकर 1977 में ब्रांट आयोग की स्थापना हुई और आयोग ने विकसित एवं विकासशील देशों की अन्तर-निर्भरता पर बल दिया। आयोग ने निम्न मुद्दों पर अपने सुझाव दिए जिससे विकासशील देशों की समस्या का समाधान किया जा सके -

(A) वस्तु व्यापार में वृद्धि
(B) विकासशील देशों की ऊर्जा व्यवस्था समाधान
(C) अं. मुद्राकोष का सुधार
(D) तकनीकि हस्तान्तरण
(E) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आर्थिकलाभ सम्बन्धी मे विचार

Scanned with CamScanner

(F) बहुपक्षीय व्यापार से विकासशील देशों की वृद्धि।

उ० द० संवाद हेतु 1981 में कानकुन (मैक्सिको) में सम्मेलन आयोजित हुआ, इसमें 8 विकसित तथा 14 विकासशील ने भाग लिया। भारत ने इस बैठक में निम्न चार माँगे प्रस्तुत की -

① वस्तुओं के आयात-निर्यात के सम्बन्ध में नए सिरे से समझौता।

② वस्तुओं के भाव स्थिर रखने हेतु अंकटाड के अन्तर्गत साझे कोष का निर्माण।

③ विकसित देशों द्वारा आयात प्रतिबंधों को समाप्त करना।

④ 1974 के मल्टीफाइबर समझौते पर वार्ता की आवश्यकता।

⑤ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के क्रियाकलाप पर नियंत्रण की आवश्यकता।

ब्रांट आयोग ने 1983 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें I.M.F., I.B.R.D. तथा अन्य के मध्य सामन्जस्य को बढ़ावा, विकासशील देशों से निवेश बढ़ाने की अनुशंसा, विकासशील को अधिक वित्तीय सहायता देने का भी आवाह्न किया गया।

परिवर्तित रणनीति (द०-द० सहयोग) :-

80 के दशक में विश्व में अनेक परिवर्तन हो रहे थे विकासशील देशों की आर्थिक दशा बदतर हुई, सोवियत संघ ने U.S. के साथ सहयोग की विदेश नीति को स्वीकारा। उ०-द० संवाद के प्रभावी न होने के कारण विकासशील देशों ने द०-द० सहयोग पर बल दिया, जिसमें सामूहिक आत्मनिर्भरता और आपसी सहयोग द्वारा नई आर्थिक विश्व व्यवस्था का निर्माण किया जा सके। यद्यपि द०-द० सहयोग का मूल आधार गुटनिरपेक्ष आन्दोलन तथा G-77 में पहले ही देखा जा सकता है परन्तु औपचारिक रूप से इसे 1980 के दशक में प्रभावी किया गया।

1982 में द०-द० की पहली बैठक नई दिल्ली में हुई जिसमें विकासशील राष्ट्रों ने आपसी सहयोग द्वारा सामूहिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा। 1985 में द०-द० (दूसरी) बैठक में विकासशील राष्ट्रों ने वरीयता व्यवस्था को लागू करने पर बल दिया, और विकासशील देशों के मध्य व्यापारिक सहयोग बढ़ाने पर भी बल दिया गया। 1987 में प्योंगयांग (उ० कोरिया) में द०-द० बैठक हुई जिसमें गुटनिरपेक्ष के विदेशमंत्रियों ने भाग लिया तथा इस संगठन के सहयोग को और प्रभावी बनाने का

1989 की क्वालालम्पुर बैठक में द० के देशों ने नए उपनिवेशवादी नियंत्रण समाप्ति हेतु आपस में सहयोग किया और औद्योगिक राज्यों द्वारा अपनाई जा रही शोषणकारी नीतियों का विरोध किया गया। द० के देशों ने इस बात पर चिंता प्रकट की कि विकसित देशों द्वारा किए व्यापार असमान गुणोत्तर राज्यों को प्राप्त हो रहे हैं।

<u>G-15</u> - ① स्थापना - 1989 में (बेलग्रेड)

② 1999 में G-20 की स्थापना हुई।

③ G-20 में विकसित और विकासशील दोनों देशों ने भाग लिया है, इसमें 7 विकसित, 13 - विकासशील।

④

~~ई.ई.~~

=> I.B.S.A.

=> गंगा - मेकांग परियोजना

=> बिम्सटेक

=> मकोभुर

=> BRIC

=> शक्ति सहयोग

=> आसियान सहयोग

W.T.O मैंच पर - G-20, G-22 गुट द० द० राष्ट्रों द्वारा बनाया गया।

Scanned with CamScanner